अमर उजाला

बरेली
शनिवार, 4 सितंबर 2021
भाद्रपद कृष्ण-द्वादशी
विक्रम संवत-2078

Page No. 01: Middle

अब बरेली में देखने को मिलेंगे संगीत के दुर्लभ वाद्य यंत्र

संवाद न्यूज एजेंसी

रिद्धिमा में खुला म्यूजिक इंस्ट्रूमेंट म्यूजियम, इसमें रखे गए हैं गुबगुबा, अलगोजा, सुरबहार, दिलरुबा जैसे तमाम दुर्लभ वाद्य यंत्र

बरेली। भारतीय शास्त्रीय संगीत देश दुनिया में सराहा जाता है। इसमें बजने वाले हिंदुस्तानी वाद्य यंत्र (साज) भी अपनी अलग पहचान रखते हैं। हर दौर के साथ संगीत के साज भी बदलते रहे हैं। प्रचलन से बाहर हो चुके वाद्य यंत्र अब लुप्त होते जा रहे हैं। इन्हें बचाए रखने के लिए श्री राममूर्ति स्मारक रिद्धिमा के सेंटर ऑफ परफार्मिंग एंड फाइन आर्ट में म्यूजिक इंस्ट्रूमेंट म्यूजियम खोला गया है। इसमें संगीत के पुराने साजों को संकलित कर रखा गया है।

इस संबंध में एसआरएमएस ट्रस्ट के सचिव आदित्य मूर्ति ने प्रेसवार्ता में बताया कि म्यूजियम में केरल, गुजरात, जम्मू कश्मीर, पश्चिम बंगाल सहित देश के कोने-कोने से लाकर सौ से ज्यादा साजों को संकलित किया है। इनके संरक्षण के लिए उनके पिता एवं ट्रस्ट के चेयरमैन देवमूर्ति ने संकल्प लिया है। इसी के लिए म्यूजियम स्थापित किया गया है। यहां अब तर्क जोगी सारंगी, रावण हत्था, गुबगुबा, अलगोजा, एकतारा जैसे लोक वाद्य यंत्र संजोए जा चुके हैं।

साथ ही विचित्र वीणा, रुद्र वीणा, सरस्वती वीणा, मयूरी वीणा, सुरबहार, दिलरुबा, पखावज, मृदंग, गोपीचंद, कश्मीरी सारंगी, संतूर, सारिंदा जैसे शास्त्रीय वाद्य यंत्र भी रखे गए हैं।

रिद्धिमा म्यूजियम में रखे वाद्य यंत्रों की जानकारी देते आदित्य मूर्ति। संवाद

खैराबाद संगीत विश्वविद्यालय से रिद्धिमा को मिली मान्यता

एसआरएमएस ट्रस्ट के सचिव आदित्य मूर्ति ने बताया कि श्री राममूर्ति स्मारक रिद्धिमा के सेंटर ऑफ परफार्मिंग एंड फाइन आर्ट को छत्तीसगढ़ के इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैराबाद से मान्यता मिल गई है। इस संबंध में उन्हें शुक्रवार को ही पत्र प्राप्त हुआ है। इसमें सेंटर से संचालित गायन, वादन, फाइन आर्ट्स, कथक, भरतनाट्यम को चार वर्ष की मान्यता देने की बात कही गई है।